विदेह | आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर
समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८४

नित नवल
शिव कुमार प्रसाद

पाँच कृतिक साहित्यिक आ
स्रोत-समीक्षात्मक अध्ययन

कविता, भाषिक अस्मिता, काव्यानुवाद
आ सम्पादकीय समीक्षा

LXXXIV

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

गजेन्द्र ठाकुर

समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८४ • LXXXIV

नित नवल शिव कुमार प्रसाद

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

विदेह • २०२७

विदेह | आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८४ · LXXXIV

नित नवल शिव कुमार प्रसाद

पाँच कृतिक साहित्यिक आ स्रोत -समीक्षात्मक अध्ययन

कविता, भाषिक अस्मिता , काव्यानुवाद आ साहित्यिक इतिहास

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

विदेह · २०२७

प्रकाशन-विवरण

ग्रन्थ-शृंखला : गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड–८४ · LXXXIV

समीक्षाधीन ग्रन्थ : नित नवल शिव कुमार प्रसाद

उपशीर्षक : पाँच कृतिक साहित्यिक आ स्रोत-समीक्षात्मक अध्ययन

मूल समीक्षात्मक अध्ययनक लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

एहि खण्डक सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

प्रकाशकीय संस्था : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादकीय संस्करण : विदेह, २०२७

© 2027 Gajendra Thakur / Preeti Thakur

पुस्तक-विन्यास : ६ × ९ इञ्च; देवनागरी युनिकोड

पाठाधार : उपयोगकर्ताद्वारा प्रदत्त “नित नवल शिव कुमार प्रसाद”क DOCX पाण्डुलिपि।

समीक्षाक आधार आ सीमा

ई आलोचना मूल साहित्यिक रचनासभक स्वतंत्र पूर्ण पाठक सम्पूर्ण जाँच नहि, गजेन्द्र ठाकुर द्वारा तैयार उपलब्ध समीक्षात्मक अध्ययनसभक सम्पादकीय पुनर्पाठ अछि। मूल कृतिसभक स्वतंत्र पूर्ण प्रतिक अभावमे कथानक, प्रकाशन-वर्ष, उद्धरण अथवा ऐतिहासिक तथ्यक विशिष्ट दावाकेँ स्वयंसिद्ध प्रमाण नहि मानल गेल अछि। प्रस्तुत अध्ययनक कथन, आलोचकक निर्णय आ एतयक सम्पादकीय विवेचन अलग राखल गेल अछि।

अध्ययनमे ग्रन्थ, व्यक्ति अथवा घटना सम्बन्धी जे विवरण आएल अछि, ताहि पर प्रश्न उठाओल जा सकैत अछि; परन्तु स्वतंत्र अभिलेखीय सत्यापन अगिला संस्करणक कार्य अछि। एहि सीमा स्पष्ट करब साहित्यिक पुनर्पाठक पारदर्शिताक हिस्सा अछि।

विस्तृत विभाग-क्रम

प्रथम विभाग : पुस्तक, पाठाधार आ आलोचनाक परिप्रेक्ष्य

द्वितीय विभाग : क्रमिक कृति-पाठ

- मनक हाट (कविता)
- सोंहाँत-अनसोंहाँत (कविता)
- राग-विराग (कविता)
- पघलैत हिमखंड (हिन्दी–मैथिली काव्यानुवाद)
- क्षितिज (साहित्यिक आलोचना)

तृतीय विभाग : साझा सूत्र आ विधागत प्रश्न

चतुर्थ विभाग : आख्यान, प्रमाण-विवेक आ सम्पादन

पंचम विभाग : समेकित साहित्यिक निर्णय

षष्ठ विभाग : कृति-पत्र आ अनुशीलन-प्रश्न

टिप्पणी : ई विभाग-क्रम अछि; वास्तविक पृष्ठ-संख्या PDF क भीतर पृष्ठांकसँ देखल जा सकैत अछि।

प्रथम विभाग : पुस्तक, पाठाधार आ आलोचनाक परिप्रेक्ष्य

१. 'नित नवल शिव कुमार प्रसाद' : साहित्यिक पठनक प्रवेश

गजेन्द्र ठाकुरक एहि संग्रहमे ५ साहित्यिक अध्ययन एक साथ उपस्थित अछि। कृतिसभक शीर्षक, विधा आ प्रश्न-विस्तार देखैत बुझाइत अछि जे ई एकरेखीय साहित्यिक परिचय नहि; पाठ, समाज आ कलात्मक रूपक परस्पर सम्बन्धक क्रमिक अध्ययन अछि। संग्रहक केन्द्रीय क्षेत्र कविता, भाषिक अस्मिता, काव्यानुवाद आ साहित्यिक इतिहास अछि।

एहि खण्डक सम्पादकीय प्रस्ताव ई नहि जे मूल लेखकक पक्ष मे अथवा विरुद्ध एक निर्णायक फैसला सुना देल जाए। मुख्य प्रश्न ई अछि जे ठाकुर कोन पुस्तक चुनैत छथि, कोन पाठ-साक्ष्य पर विश्वास करैत छथि, कोन व्याख्या बनबैत छथि, आ अपन निर्णयक सीमा केना चिह्नैत छथि। आलोचना पर आलोचनाक ई दोगुना उत्तरदायित्व अध्ययनकेँ अधिक कठोर बनबैत अछि।

२. मूल कृति, ठाकुरक अध्ययन आ सम्पादकीय पुनर्पाठ

मूल साहित्यिक कृतिक रचनाकार, ओकर समीक्षक गजेन्द्र ठाकुर, आ प्रस्तुत सम्पादकीय समीक्षाक स्तर अलग छथि। जे घटना मूल कृतिक कथा-संसारमे घटैत अछि से कथात्मक तथ्य थिक; जकर व्याख्या ठाकुर करैत छथि से आलोचनात्मक स्थापना थिक; एहि समीक्षाक निर्णय ओहि स्थापनाक प्रमाण-सम्बन्ध आ शिल्पविश्लेषण पर केन्द्रित अछि।

एहि भेदक अभावमे प्रशंसा दोहराएल जा सकैत अछि अथवा मूल पुस्तकक तथ्य पर बिना देखनहि फैसला बनि सकैत अछि। एतय दावाक स्तर स्पष्ट रखबाक पद्धति अपनाओल गेल अछि।

३. साहित्यिक विवेक आ सामाजिक उत्तरदायित्व

लोकजीवन, श्रम, स्त्रीक सामाजिक स्थिति, जाति आ सार्वजनिक संस्था सन विषय साहित्यिक लेखनकेँ तत्काल नैतिक महत्त्व दैत छथि। मुदा रचनाक साहित्यिक मूल्य ओकर

विषय मात्रसँ नहि, भाषा, बिम्ब, दृश्य, कथनकर्ता, काल आ संरचनाक भीतर बनैत अछि। ताहि कारण विषयक सामाजिक गम्भीरता आ कलात्मक सिद्धिक अन्तर राखब आवश्यक अछि।

ठाकुरक अध्ययनसभक जे भाग ई भेद निभबैत अछि ओ अधिक विश्वासयोग्य बनैत अछि। जतय सामान्य सदिच्छा आलोचनाक निष्कर्ष बनि जाइत अछि, ओतय अगिला संशोधन लेल विशेष पाठ-साक्ष्य जोड़ल जाएबाक चाही।

द्वितीय विभाग : उपलब्ध अध्ययनक क्रमिक पठन

४. 'मनक हाट' : पाठ-क्षेत्र आ आलोचनाक कसौटी

उपलब्ध अध्ययनक केन्द्र मन आ हाटक रूपक; अन्हार–इजोत; 'मनुख', 'अनुत्तरित प्रश्न', 'मरतै गरीबहे', 'नाक' आ कोरोना काल अछि। एहि विविध प्रसंगक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करबाक लेल कथ्यक सार आ ओकर अभिव्यक्तिक प्रणालीकेँ अलग-अलग पहचानब जरूरी अछि।

'मनक हाट'पर अध्ययन निजत्व आ लोकक संयुक्त रचनात्मक क्षेत्र देखबैत अछि। 'मन'क एकान्त आ 'हाट'क बहुस्वरक बीच प्रत्यक्ष विरोध नहि; निजी अनुभव समाजक विनिमयमे बदलैत अछि। ठाकुर एहि द्वन्द्वकेँ शीर्षक मात्रक अर्थ-क्रीड़ा नहि मानि प्रश्नोक्ति, सम्बोधन आ कविता-विशेषक दृश्यसँ जोड़ैत छथि। 'अन्हार' आ 'इजोत'क बारम्बार अवतरण आशा आ संकटक सहअस्तित्व समझबाक एक उपयोगी सूत्र दैत अछि।

'मनुख'क लेखकीय स्वीकृति, 'अनुत्तरित प्रश्न'क नैतिक असुविधा, 'मरतै गरीबहे'क सामाजिक करुणा आ 'नाक'क व्यंग्यक उदाहरणसँ समीक्षा व्यापक अनुभवक्षेत्र खोलैत अछि। मुदा सभ कविताक सामाजिक महत्त्व एकहि स्तरपर काव्य-सफलता नहि होइत। प्रत्यक्ष नीति-वाक्य, प्रचलित उपमान आ सूची-प्रधान कथन कतहु कविताक बहुअर्थता घटबैत छथि; कतहु प्रश्नक खुलापन पाठककेँ अधिक सक्रिय बनबैत अछि।

५. 'मनक हाट' : आलोचनात्मक उपलब्धि आ अगिला प्रश्न

महामारीक रचनासभक चर्चा समकालीन इतिहासक प्रवेशद्वार अछि, मुदा कविता समाजशास्त्रीय सर्वेक्षण नहि। श्रमक संकट, घरक भय आ रोगक अनुभव कतए बिम्ब बनल, कतए मात्र प्रसंगक उल्लेख रहल—एहि तुलनासँ पुस्तकक साहित्यिक मूल्यनिर्णय अधिक संतुलित होयत।

एहि कृति-विषयक सम्पादकीय अनुशीलनक प्रश्न : 'मन', 'हाट', 'अन्हार' आ 'इजोत'क आवर्तन किन कवितामे नब अर्थ उत्पन्न करैत अछि आ किनमे प्रचलित भावसूत्र रहि जाइत अछि?

समग्र निर्णय एतबे धरि निश्चित अछि जे ठाकुरक अध्ययन पाठककेँ अनेक अर्थद्वार खोलैत अछि; अन्तिम ग्रन्थ-सत्यापन लेल मूल कृतिक पूर्ण प्रति, संस्करण आ उपयुक्त पाठ-स्थानक मिलान आवश्यक रहत।

६. 'सोंहाँत-अनसोंहाँत' : पाठ-क्षेत्र आ आलोचनाक कसौटी

उपलब्ध अध्ययनक केन्द्र 'मिथिला धाम', 'शहर ओ गेल', 'गाम छूटल', 'भातक थारी', 'खेतिहर' आ 'साखी' शृंखला अछि। एहि विविध प्रसंगक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करबाक लेल कथ्यक सार आ ओकर अभिव्यक्तिक प्रणालीकेँ अलग-अलग पहचानब जरूरी अछि।

'सोंहाँत-अनसोंहाँत'क शीर्षक अपनत्व आ असहजताक द्वन्द्व रचैत अछि। ठाकुरक अध्ययने एहि तनावकेँ भाषिक अस्मिता, ग्राम्य स्मृति आ बदलैत जीवन-व्यवहारक संग पढ़ैत अछि। 'शहर ओ गेल' आ 'गाम छूटल'क सम्भावित स्थलान्तरकेँ केवळ करुण नॉस्टैल्जिया नबुझि सामाजिक परिवर्तनक प्रमाण-विवेकसँ देखबाक आवश्यकता अछि। गामक स्मृति अपनहि समतामूलक समाजक साक्ष्य नहि।

'भातक थारी' आ 'खेतिहर'क प्रसंगमे भौतिक अभाव, भोजनक श्रम आ कृषक जीवनक अर्थ एक संग उपस्थित होइत अछि। ई ठोस वस्तु-बिम्ब समीक्षाक बल अछि। मुदा भावुक

'मिथिला' आ निर्धन श्रमिकक अलग-अलग अनुभूति बीच दूरी रहि सकैत अछि; 'हम' कहैत कथनकर्ता ककर सामाजिक स्थानसँ बोलैत छथि, से जाँचब चाही।

७. 'सोंहाँत-अनसोंहाँत' : आलोचनात्मक उपलब्धि आ अगिला प्रश्न

'साखी'क लघु नीतिवचन आ अधिक दृश्यात्मक कविता बीच रूपगत अन्तर ध्यान देबय योग्य अछि। नीतिक स्पष्टता काव्यक एक साधन अछि, अन्तिम कसौटी नहि। ठाकुरक मूल्यांकन जखन सामान्य 'लोकलय'क अपेक्षा विशेष ध्वनि, विराम आ अर्थपर ठहरैत अछि, तखन बेसी विश्वसनीय बनैत अछि।

एहि कृति-विषयक सम्पादकीय अनुशीलनक प्रश्न : ग्राम्य स्मृति कतेक विशिष्ट श्रम-सामग्री आ बोलचालसँ निर्मित अछि, आ कतए ओ सामान्यीकृत सांस्कृतिक गौरव बनैत अछि?

समग्र निर्णय एतबे धरि निश्चित अछि जे ठाकुरक अध्ययन पाठककेँ अनेक अर्थद्वार खोलैत अछि; अन्तिम ग्रन्थ-सत्यापन लेल मूल कृतिक पूर्ण प्रति, संस्करण आ उपयुक्त पाठ-स्थानक मिलान आवश्यक रहत।

८. 'राग-विराग' : पाठ-क्षेत्र आ आलोचनाक कसौटी

उपलब्ध अध्ययनक केन्द्र बयासी कविता; स्नेह, विरक्ति, बाढ़ि, सार्वजनिक नैतिकता, भाषा आ परिवारक स्मृति अछि। एहि विविध प्रसंगक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करबाक लेल कथ्यक सार आ ओकर अभिव्यक्तिक प्रणालीकेँ अलग-अलग पहचानब जरूरी अछि।

'राग-विराग'क बयासी कविताक विस्तृत क्षेत्रक सामने समीक्षकक पहिल चुनौती प्रतिनिधि चयनक अछि। राग केवल प्रेम अथवा अनुरक्ति नहि, आ विराग मात्र पलायन नहि; दुनू मिलि समाजक प्रति लगाव आ समाजक अनीतिसँ असहमतिक द्वन्द्व रचैत अछि। ठाकुरक अध्ययन एही अर्थक धरातलपर संग्रहक विविधता एकत्र करबाक प्रयास करैत अछि।

बाढ़ि, शिक्षा आ पर्यावरणीय संकटक उल्लेख 'लोकस्मृति'क सहज उत्सवकेँ जटिल करैत अछि। मुदा काव्यक भीतर नदीक जल, घरक क्षति आ भूमिक ध्वंस जे रूपमे आबैत अछि

ओकरा बाहरी घटनाक प्रामाणिक इतिहास मानि लेब उचित नहि। साहित्यिक साक्ष्य आ ऐतिहासिक अभिलेखक भेद राखब संशोधित समीक्षामे अनिवार्य अछि।

९. 'राग-विराग' : आलोचनात्मक उपलब्धि आ अगिला प्रश्न

विस्तृत संग्रहमे कतिपय बिम्ब शक्तिशाली भऽ सकैत अछि आ कतिपय स्पष्ट उपदेशमे सीमित; समीक्षाक निर्णायक योगदान उचित उदाहरण चुनि भिन्नता देखेबामे होयत। संख्या-बोध मात्रसँ कलात्मक विविधता सिद्ध नहि होइत।

एहि कृति-विषयक सम्पादकीय अनुशीलनक प्रश्न : बयासी कविताक कतेक प्रतिनिधि पाठ समूच संग्रहक 'राग–विराग' सम्बन्धी निर्णयकेँ समर्थित करैत अछि?

समग्र निर्णय एतबे धरि निश्चित अछि जे ठाकुरक अध्ययन पाठककेँ अनेक अर्थद्वार खोलैत अछि; अन्तिम ग्रन्थ-सत्यापन लेल मूल कृतिक पूर्ण प्रति, संस्करण आ उपयुक्त पाठ-स्थानक मिलान आवश्यक रहत।

१०. 'पघलैत हिमखंड' : पाठ-क्षेत्र आ आलोचनाक कसौटी

उपलब्ध अध्ययनक केन्द्र रजनी छाबड़ाक हिन्दी कविता, शिव कुमार प्रसादक मैथिली अनुवाद; तिरसठि कविता; स्त्री-अस्मिता आ पारिवारिक सम्बन्ध अछि। एहि विविध प्रसंगक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करबाक लेल कथ्यक सार आ ओकर अभिव्यक्तिक प्रणालीकेँ अलग-अलग पहचानब जरूरी अछि।

'पघलैत हिमखंड'क अध्ययनक विशेषता ई अछि जे एतय रचनाक अर्थ दू भाषा आ दू काव्य-प्रसंगक बीच चलैत अछि। रजनी छाबड़ाक हिन्दी कविता आ शिव कुमार प्रसादक मैथिली रूपान्तरक सम्बन्ध मूल लेखक/अनुवादकक श्रेय स्पष्ट राखि पढ़ब जरूरी अछि। हिन्दी कविताक भाव संरचना मैथिली शब्दावली, सम्बोधन आ स्थानीय लयमे कतेक परिवर्तित भेल, से समीक्षा लेल केन्द्रीय कसौटी अछि।

तिरसठि कवितामे स्त्रीक आत्मपरिचय, स्मृति, परिवार, शिक्षा आ ठंढा पड़ैत सम्बन्धक विषय एकत्र होइत छथि। 'हिमखंड'क पिघलब भावना-मात्र नहि, सम्बन्धक कठोर संरचनाक बदलैत

रूपक अछि। मुदा बिना मूल हिन्दी पंक्ति आ ओकर मैथिली समकक्ष सामने रखने ‘निष्ठा’ अथवा ‘सर्जनात्मक पुनर्सृजन’क प्रमाणित निष्कर्ष देब कठिन अछि।

११. ‘पघलैत हिमखंड’ : आलोचनात्मक उपलब्धि आ अगिला प्रश्न

ठाकुरक समीक्षा अनुवादकेँ गौण साहित्य नहि मानि स्वतन्त्र पाठकीय जीवन देबाक दिशा खोलैत अछि। अगिला संस्करणमे समान पदक द्विभाषिक तालिका, अनुवाद-निर्णयक कारण आ अर्थहानि/अर्थवृद्धिक उदाहरण जोड़ब उचित होयत।

एहि कृति-विषयक सम्पादकीय अनुशीलनक प्रश्न : मूल हिन्दी आ मैथिली अनुवादक युग्मित पंक्तिसँ सम्बोधन, मुहावरा, छन्द आ स्त्रीक स्वरमे कोन ठोस परिवर्तन देखल जा सकैत अछि?

समग्र निर्णय एतबे धरि निश्चित अछि जे ठाकुरक अध्ययन पाठककेँ अनेक अर्थद्वार खोलैत अछि; अन्तिम ग्रन्थ-सत्यापन लेल मूल कृतिक पूर्ण प्रति, संस्करण आ उपयुक्त पाठ-स्थानक मिलान आवश्यक रहत।

१२. ‘क्षितिज’ : पाठ-क्षेत्र आ आलोचनाक कसौटी

उपलब्ध अध्ययनक केन्द्र नागार्जुनक कविता आ हिन्दी/मैथिली उपन्यास तथा अनूप लाल मण्डलपर तीन निबन्ध अछि। एहि विविध प्रसंगक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करबाक लेल कथ्यक सार आ ओकर अभिव्यक्तिक प्रणालीकेँ अलग-अलग पहचानब जरूरी अछि।

‘क्षितिज’क समीक्षा अन्य चार कृतिक अपेक्षा आलोचनापर आलोचना अछि। एक निबन्ध नागार्जुनक जनकाव्य, दोसर हुनकर हिन्दी–मैथिली उपन्यास, तेसर अनूप लाल मण्डलक व्यष्टिसँ समष्टि दिस रचनात्मक गतिक विषय बनबैत अछि। ठाकुर एहि तीनू प्रयासक बीच समाजधर्मी रचनाक साझा सूत्र देखैत छथि, मुदा कविता, उपन्यास आ साहित्येतिहासक प्रमाण-नियम एक समान नहि होइत।

‘प्रतिबद्ध–सम्बद्ध–आबद्ध’ सन सूत्र अर्थवान अछि जँ तकर निकटपाठक आधार स्पष्ट हो। नागार्जुनक दुई भाषा-रचना पर मूल्यनिर्णय लेल भाषा-चयन, पात्रक परिवेश, कथन-संरचना

आ प्रकाशित संस्करणक अन्तर देखबाक चाही। केवल जनपक्षधर विषयक समानता द्विभाषिक शिल्पक तुलनाक विकल्प नहि।

१३. 'क्षितिज' : आलोचनात्मक उपलब्धि आ अगिला प्रश्न

अनूप लाल मण्डलपर समष्टिक आदर्शक प्रस्ताव समीक्षा लेल एक बौद्धिक प्रश्न अछि— रचनामे एक व्यक्तिक पीड़ा कखन सामूहिक व्यवस्था पर प्रश्न बनैत अछि? ई शब्दकोशीय श्रेणी नहि; कथावस्तु आ रूपक वास्तविक संगठनसँ एकर परीक्षा होयत।

एहि कृति-विषयक सम्पादकीय अनुशीलनक प्रश्न : तीन निबन्धक तर्क, उद्धरण आ प्राथमिक पाठक सापेक्ष तुलनाक कोन स्पष्ट सारणी तैयार कएल जा सकैत अछि?

समग्र निर्णय एतबे धरि निश्चित अछि जे ठाकुरक अध्ययन पाठककेँ अनेक अर्थद्वार खोलैत अछि; अन्तिम ग्रन्थ-सत्यापन लेल मूल कृतिक पूर्ण प्रति, संस्करण आ उपयुक्त पाठ-स्थानक मिलान आवश्यक रहत।

तृतीय विभाग : साझा सूत्र आ विधागत प्रश्न

१४. मन आ समाजक द्वन्द्व

'मनक हाट'क निजत्व, 'सोंहाँत-अनसोंहाँत'क अपनत्व आ 'राग-विराग'क संवेदनात्मक टकराव तीन रूपमे एक साझा प्रश्न राखैत अछि: व्यक्तिक मन सामाजिक सम्बन्धसँ कतेक स्वतंत्र अछि? ठाकुरक अध्ययनसभ ई प्रश्नकेँ भाषिक आ बिम्बात्मक स्तरपर जोड़ैत छथि; मुदा समान भावशब्दक उपस्थिति समान शिल्पक प्रमाण नहि।

एहि साझा सूत्रक उपयोग सँ पूर्ववर्ती अध्ययनसभक आपसी सम्बन्ध देखल जा सकैत अछि, मुदा प्रत्येक रचनाक विधागत वैशिष्ट्य, कथन-क्रम आ पाठीय प्रमाण सुरक्षित राखब आवश्यक अछि। तुलना केवल विषय-साम्यक नाम नहि; अलग शिल्प आ अलग निष्कर्षक बीच तर्क-संगतिक परीक्षा थिक।

१५. ग्राम्य स्मृति बनाम वास्तविक ग्राम-समाज

गाम, डीह, भातक थारी, खेतिहर जीवन आ बाढ़िक दृश्यक समवेत उल्लेख मैथिलीक स्थानीय जीवन-संसार समृद्ध करैत अछि। तखनहो स्मृतिक आत्मीयता जाति, धन, स्त्री आ श्रमक असमान अनुभूतिकेँ छिपा सकैत अछि। लोक-जीवनक सौन्दर्य आ ओकर शक्ति-संरचना एक साथ पढ़ब आलोचनाक कर्तव्य अछि।

एहि साझा सूत्रक उपयोग सँ पूर्ववर्ती अध्ययनसभक आपसी सम्बन्ध देखल जा सकैत अछि, मुदा प्रत्येक रचनाक विधागत वैशिष्ट्य, कथन-क्रम आ पाठीय प्रमाण सुरक्षित राखब आवश्यक अछि। तुलना केवल विषय-साम्यक नाम नहि; अलग शिल्प आ अलग निष्कर्षक बीच तर्क-संगतिक परीक्षा थिक।

१६. कवितामे प्रश्नक लय आ घोषणाक भाषा

प्रश्नवाचक कविता पाठककेँ विकल्प खोजबाक अवकाश दैत अछि; घोषणात्मक कविता वैचारिक दिशा स्पष्ट करैत अछि। दुनू शिल्प सम्भव अछि। मूल्यांकन करबाक समय प्रश्न, आवर्तन, सामान्य उपमान आ दृश्य-विशिष्ट बिम्बक तुलनाक आधार देब आवश्यक अछि; ‘सामाजिक’ कहि रचनाकेँ स्वतः श्रेष्ठ नहि ठहराओल जाए।

एहि साझा सूत्रक उपयोग सँ पूर्ववर्ती अध्ययनसभक आपसी सम्बन्ध देखल जा सकैत अछि, मुदा प्रत्येक रचनाक विधागत वैशिष्ट्य, कथन-क्रम आ पाठीय प्रमाण सुरक्षित राखब आवश्यक अछि। तुलना केवल विषय-साम्यक नाम नहि; अलग शिल्प आ अलग निष्कर्षक बीच तर्क-संगतिक परीक्षा थिक।

१७. अनुवादक श्रेय आ तुलनाक प्रमाण

‘पघलैत हिमखंड’क अवसर स्पष्ट करैत अछि जे मूल कवि, अनुवादक आ समीक्षक तीन अलग कार्य केनिहार छथि। जँ मूल हिन्दी पुस्तक प्रत्यक्ष उपलब्ध नहि तँ अनुवादक निर्णय पर कथन सीमित रहत। ई सावधानी ‘क्षितिज’क आलोचनापर आलोचनामे सेहो लागु होइत अछि—जतय प्राथमिक उद्धरण बिनु आलोचकक निर्णयकेँ स्वतन्त्र तथ्य नहि मानल जाए।

एहि साझा सूत्रक उपयोग सँ पूर्ववर्ती अध्ययनसभक आपसी सम्बन्ध देखल जा सकैत अछि, मुदा प्रत्येक रचनाक विधागत वैशिष्ट्य, कथन-क्रम आ पाठीय प्रमाण सुरक्षित राखब आवश्यक अछि। तुलना केवल विषय-साम्यक नाम नहि; अलग शिल्प आ अलग निष्कर्षक बीच तर्क-संगतिक परीक्षा थिक।

१८. नागार्जुन, भाषा आ समष्टिक इतिहास

द्विभाषिक सृजनकेँ एक भाषा दोसराक सेवा-मात्र मानि नहि पढ़ल जाए। नागार्जुन/यात्रीक विषय-विस्तार आ अनूप लाल मण्डलक जनाभिमुख लेखन अलग सांस्कृतिक स्थितिमे अवस्थित अछि। ठाकुरक ग्रन्थक योगदान एहि बीच प्रश्न उठेबामे अछि, मुदा पूर्ण साहित्येतिहासक दावा लेल व्यापक पाठ-संग्रह आ ग्रन्थसूची चाही।

एहि साझा सूत्रक उपयोग सँ पूर्ववर्ती अध्ययनसभक आपसी सम्बन्ध देखल जा सकैत अछि, मुदा प्रत्येक रचनाक विधागत वैशिष्ट्य, कथन-क्रम आ पाठीय प्रमाण सुरक्षित राखब आवश्यक अछि। तुलना केवल विषय-साम्यक नाम नहि; अलग शिल्प आ अलग निष्कर्षक बीच तर्क-संगतिक परीक्षा थिक।

चतुर्थ विभाग : आख्यान, प्रमाण-विवेक आ सम्पादन

१९. आलोचना पर आलोचना : प्रमाणक दू स्तर

एहि खण्डक विषय गजेन्द्र ठाकुर द्वारा लिखल साहित्यिक अध्ययनक सम्पादकीय पुनर्पाठ अछि। समीक्षाधीन कृतिक मूल कथन, ठाकुरक चयनित उद्धरण आ वर्तमान सम्पादकीय निर्णय तीन अलग स्तर मानल गेल अछि। कोनो कथानक-तथ्य वा प्रकाशन-इतिहासक दावा केवल अध्ययनमे लिखल होएबाक कारण स्वतंत्र सत्यापित तथ्य नहि बनैत। ई अन्तर लेखकक श्रमक महत्त्व घटबैत नहि, बल्कि पाठक समक्ष स्रोतक सही स्थिति स्पष्ट करैत अछि।

प्रस्तुत खण्डक संशोधित आलोचना-संस्करणक लेल एहि आधारपर पर्याप्त पाठीय उदाहरण, स्पष्ट संदर्भ आ विरोधी व्याख्याक सम्भावना सँगे राखल जाए। एहन प्रक्रिया मैथिली आलोचनाक सार्वजनिक सत्यापन-क्षमता बढ़बैत अछि।

२०. उद्धरण, पृष्ठ आ सन्दर्भक नीति

समीक्षाक आदर्श सन्दर्भ केवल ग्रन्थनामक सूची नहि, विशिष्ट पाठ-स्थानक साक्ष्य अछि। एकटा तीक्ष्ण निष्कर्षक संग मूल पद्य, प्रसंग वा दृश्य, संस्करण, पृष्ठ आ आलोचकक व्याख्या देखाओल गेल तँ पाठक स्वतन्त्र रूपेँ तर्क जाँचि सकैत छथि। उपलब्ध स्रोत-आधारित ई समीक्षा जे मूल स्वतंत्र कृति नहि देखलनि, तकरा विषयमे प्रत्यक्ष परीक्षणक दावा नहि करैत अछि।

प्रस्तुत खण्डक संशोधित आलोचना-संस्करणक लेल एहि आधारपर पर्याप्त पाठीय उदाहरण, स्पष्ट संदर्भ आ विरोधी व्याख्याक सम्भावना सँगे राखल जाए। एहन प्रक्रिया मैथिली आलोचनाक सार्वजनिक सत्यापन-क्षमता बढ़बैत अछि।

२१. सामाजिक विषय आ कलात्मक रूपक अन्तर

जाति, स्त्री, श्रम, शासन वा पर्यावरण सन गम्भीर प्रश्न साहित्यक आवश्यक विषय भऽ सकैत छथि, मुदा विषयक नैतिक अनिवार्यता अपनहि सफल कविता वा आख्यानक प्रमाण नहि। ध्वनि, वाक्य, दृष्टिबिन्दु, दृश्य, कथागति, विराम, मौन आ अन्तिम मोड़क परीक्षा साहित्यिक निर्णयकेँ तर्कसंगत बनबैत अछि।

प्रस्तुत खण्डक संशोधित आलोचना-संस्करणक लेल एहि आधारपर पर्याप्त पाठीय उदाहरण, स्पष्ट संदर्भ आ विरोधी व्याख्याक सम्भावना सँगे राखल जाए। एहन प्रक्रिया मैथिली आलोचनाक सार्वजनिक सत्यापन-क्षमता बढ़बैत अछि।

२२. सावधान भाषा आ विवाद्य कथन

जहाँ तथ्यक स्वतंत्र मूल अभिलेख उपलब्ध नहि अछि ओतय ‘अध्ययनक अनुसार’, ‘प्रस्तुत पाठमे’, ‘सम्भावित’, ‘पुनः सत्यापन अपेक्षित’ सन भाषा अपनाओल गेल अछि। साहित्यिक रूपक, पात्रक कथन आ काल्पनिक घटनाकेँ सामाजिक इतिहासक प्रमाणक रूपमे सीधे स्वीकार कएल नहि गेल अछि।

प्रस्तुत खण्डक संशोधित आलोचना-संस्करणक लेल एहि आधारपर पर्याप्त पाठीय उदाहरण, स्पष्ट संदर्भ आ विरोधी व्याख्याक सम्भावना सँगे राखल जाए। एहन प्रक्रिया मैथिली आलोचनाक सार्वजनिक सत्यापन-क्षमता बढ़बैत अछि।

२३. भाषिक रूप, लोकबोली आ सम्पादन

मैथिलीक विविध वाक्यरूप, बोली आ मिश्रित शब्दावलीकेँ यान्त्रिक शुद्धताक नामपर मिटाएब उचित नहि। मुदा लेखकक उद्धरण, समीक्षकक वाक्य आ प्रकाशकीय सूचना बीच वर्तनी-संगति पाठकीय सुविधा लेल आवश्यक अछि। संशोधित संस्करणमे शीर्षक, व्यक्तिनाम आ ग्रन्थनामक एकरूपता सुरक्षित रखब चाही।

प्रस्तुत खण्डक संशोधित आलोचना-संस्करणक लेल एहि आधारपर पर्याप्त पाठीय उदाहरण, स्पष्ट संदर्भ आ विरोधी व्याख्याक सम्भावना सँगे राखल जाए। एहन प्रक्रिया मैथिली आलोचनाक सार्वजनिक सत्यापन-क्षमता बढ़बैत अछि।

पंचम विभाग : समेकित साहित्यिक निर्णय

२४. सम्पादकीय उपलब्धि : आलोचनात्मक सार्वजनिकता

गजेन्द्र ठाकुरक अध्ययनसभक प्रमुख उपलब्धि ई अछि जे उपेक्षित वा कम चर्चित रचनाकेँ सामान्य परिचयक स्थानपर प्रश्नोन्मुख पठनक अवसर देल गेल अछि। साहित्यिक पाठक बीच सामाजिक अनुभव, लोकभाषा आ कलात्मक शिल्पक सम्बन्धपर चर्चा एतय सक्रिय होइत अछि।

ई निर्णय उपलब्ध DOCX अध्ययनक आधारपर बनल सम्पादकीय मूल्यांकन अछि; मूल लेखकक समूच प्रकाशित रचनाक सम्पूर्ण निर्णायक आकलन नहि।

२५. सम्भावित सीमा : कथासार, नैतिक निष्कर्ष आ निकटपाठ

विस्तृत सामाजिक व्याख्या कतहु मूल पद्यांश अथवा दृश्य-संगत विश्लेषणक अपेक्षा अधिक स्थान लैत अछि। नैतिक रूपसँ समुचित निष्कर्ष जँ पाठक रूपात्मक संगतिक बिना राखल जाए तँ आलोचना घोषणामूलक बनि सकैत अछि। एहि कारण प्रत्येक महत्त्वपूर्ण मूल्यनिर्णयक लग एक प्रतिनिधि पाठ-साक्ष्य आ विरोधी पाठ-सम्भावना देब उचित होयत।

ई निर्णय उपलब्ध DOCX अध्ययनक आधारपर बनल सम्पादकीय मूल्यांकन अछि; मूल लेखकक समूच प्रकाशित रचनाक सम्पूर्ण निर्णायक आकलन नहि।

२६. अगिला संस्करणक संशोधन-कार्यसूची

सम्बन्धित मूल पुस्तकक प्रमाणित प्रति, संस्करण-विवरण, विशिष्ट पृष्ठ, सम्भव भेला पर दोसर साक्ष्य, प्रत्यक्ष उद्धरणक मिलान आ समान विधाक भिन्न कृतिक तुलना अगिला संस्करणमे जोड़ल जाए। विषय-विशेषक सामान्य इतिहास आ स्रोतपुस्तकक कथनकेँ अलग सूचीमे राखल जाए, जाहिसँ पाठक स्वतंत्र जाँच कऽ सकथि।

ई निर्णय उपलब्ध DOCX अध्ययनक आधारपर बनल सम्पादकीय मूल्यांकन अछि; मूल लेखकक समूच प्रकाशित रचनाक सम्पूर्ण निर्णायक आकलन नहि।

२७. अन्तिम साहित्यिक निर्णय

प्रस्तुत सम्पादकीय पठन न प्रशंसामूलक परिचय अछि, न दोष-सूची। एकर उद्देश्य अध्ययनसभक सही उपलब्धि चिह्नब, उद्धृत साक्ष्यक सीमा स्पष्ट करब आ अधिक कठोर निकटपाठ लेल रास्ता प्रस्तावित करब अछि। विवेकशील मैथिली आलोचनामे सहानुभूति, रूपविचार आ स्रोत-सावधानी तीनू आवश्यक छथि।

ई निर्णय उपलब्ध DOCX अध्ययनक आधारपर बनल सम्पादकीय मूल्यांकन अछि; मूल लेखकक समूच प्रकाशित रचनाक सम्पूर्ण निर्णायक आकलन नहि।

षष्ठ विभाग : कृति-पत्र आ अनुशीलन-प्रश्न

२८. अध्ययन-पत्र : 'मनक हाट'

विधा : कविता। पाठ-क्षेत्र : मन आ हाटक रूपक; अन्हार–इजोत; 'मनुख', 'अनुत्तरित प्रश्न', 'मरतै गरीबहे', 'नाक' आ कोरोना काल।

अगिला अनुशीलनक मूल प्रश्न : 'मन', 'हाट', 'अन्हार' आ 'इजोत'क आवर्तन किन कवितामे नब अर्थ उत्पन्न करैत अछि आ किनमे प्रचलित भावसूत्र रहि जाइत अछि?

पाठ-सत्यापनक क्रम : (१) मूल कृतिक प्रमाणित संस्करण; (२) प्रतिनिधि उद्धरण आ प्रसंग; (३) ठाकुरक व्याख्या; (४) सम्भावित भिन्न पठन; (५) सीमित, साक्ष्याधारित साहित्यिक निर्णय।

२९. अध्ययन-पत्र : 'सोंहाँत-अनसोंहाँत'

विधा : कविता। पाठ-क्षेत्र : 'मिथिला धाम', 'शहर ओ गेल', 'गाम छूटल', 'भातक थारी', 'खेतिहर' आ 'साखी' शृंखला।

अगिला अनुशीलनक मूल प्रश्न : ग्राम्य स्मृति कतेक विशिष्ट श्रम-सामग्री आ बोलचालसँ निर्मित अछि, आ कतए ओ सामान्यीकृत सांस्कृतिक गौरव बनैत अछि?

पाठ-सत्यापनक क्रम : (१) मूल कृतिक प्रमाणित संस्करण; (२) प्रतिनिधि उद्धरण आ प्रसंग; (३) ठाकुरक व्याख्या; (४) सम्भावित भिन्न पठन; (५) सीमित, साक्ष्याधारित साहित्यिक निर्णय।

३०. अध्ययन-पत्र : 'राग-विराग'

विधा : कविता। पाठ-क्षेत्र : बयासी कविता; स्नेह, विरक्ति, बाढ़ि, सार्वजनिक नैतिकता, भाषा आ परिवारक स्मृति।

अगिला अनुशीलनक मूल प्रश्न : बयासी कविताक कतेक प्रतिनिधि पाठ समूच संग्रहक 'राग–विराग' सम्बन्धी निर्णयकेँ समर्थित करैत अछि?

पाठ-सत्यापनक क्रम : (१) मूल कृतिक प्रमाणित संस्करण; (२) प्रतिनिधि उद्धरण आ प्रसंग; (३) ठाकुरक व्याख्या; (४) सम्भावित भिन्न पठन; (५) सीमित, साक्ष्याधारित साहित्यिक निर्णय।

३१. अध्ययन-पत्र : 'पघलैत हिमखंड'

विधा : हिन्दी–मैथिली काव्यानुवाद। पाठ-क्षेत्र : रजनी छाबड़ाक हिन्दी कविता, शिव कुमार प्रसादक मैथिली अनुवाद; तिरसठि कविता; स्त्री-अस्मिता आ पारिवारिक सम्बन्ध।

अगिला अनुशीलनक मूल प्रश्न : मूल हिन्दी आ मैथिली अनुवादक युग्मित पंक्तिसँ सम्बोधन, मुहावरा, छन्द आ स्त्रीक स्वरमे कोन ठोस परिवर्तन देखल जा सकैत अछि?

पाठ-सत्यापनक क्रम : (१) मूल कृतिक प्रमाणित संस्करण; (२) प्रतिनिधि उद्धरण आ प्रसंग; (३) ठाकुरक व्याख्या; (४) सम्भावित भिन्न पठन; (५) सीमित, साक्ष्याधारित साहित्यिक निर्णय।

३२. अध्ययन-पत्र : 'क्षितिज'

विधा : साहित्यिक आलोचना। पाठ-क्षेत्र : नागार्जुनक कविता आ हिन्दी/मैथिली उपन्यास तथा अनूप लाल मण्डलपर तीन निबन्ध।

अगिला अनुशीलनक मूल प्रश्न : तीन निबन्धक तर्क, उद्धरण आ प्राथमिक पाठक सापेक्ष तुलनाक कोन स्पष्ट सारणी तैयार कएल जा सकैत अछि?

पाठ-सत्यापनक क्रम : (१) मूल कृतिक प्रमाणित संस्करण; (२) प्रतिनिधि उद्धरण आ प्रसंग; (३) ठाकुरक व्याख्या; (४) सम्भावित भिन्न पठन; (५) सीमित, साक्ष्याधारित साहित्यिक निर्णय।

३३. अन्तिम सम्पादकीय निवेदन

‘नित नवल शिव कुमार प्रसाद’क अध्ययनसभ साहित्यिक संवादक एक उपयोगी आधार उपलब्ध करबैत छथि। एतय प्रस्तुत समीक्षा ओहि संवादकेँ अधिक कठोर स्रोत-विवेक, शिल्प-परीक्षा आ प्रतिनिधित्वक प्रश्नक संग आगाँ बढ़ेबाक प्रस्ताव रखैत अछि। अध्ययनक महत्त्व मानब आ ओकर सीमाकेँ चिह्नब एक-दोसराक विरोध नहि; ई दुनू समीक्षाक नैतिक अनुशासनक अंग छथि।

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार। विदेह, २०२७।

पाठाधार आ सन्दर्भ

प्राथमिक सम्पादकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, “‘नित नवल शिव कुमार प्रसाद’”, उपयोगकर्ताद्वारा प्रदत्त DOCX पाण्डुलिपि।

समीक्षित कृतिसभक शीर्षक आ विषय-विवरण प्रस्तुत पाठाधारसँ लेल गेल अछि। मूल स्वतंत्र ग्रन्थसभक प्रत्यक्ष परीक्षण आ बाहरी अभिलेख-सत्यापन एहि संस्करणमे शामिल नहि अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८४

एहि खण्डमे गजेन्द्र ठाकुरक ‘नित नवल शिव कुमार प्रसाद’क पाँच अध्ययनक समीक्षा प्रस्तुत अछि। ‘मनक हाट’, ‘सोंहाँत-अनसोंहाँत’, ‘राग-विराग’, ‘पघलैत हिमखंड’ आ ‘क्षितिज’क माध्यमसँ कविताक मनोभूमि, ग्राम्य स्मृति, भाषा, स्त्री-अस्मिता आ द्विभाषिक साहित्यक आलोचना कएल गेल अछि।

रजनी छाबड़ाक कविताक हिन्दी-मैथिली रूपान्तरण, नागार्जुनक द्विभाषिक लेखन आ अनूप लाल मण्डलक समष्टिक दृष्टिपर प्रमाण-सावधान पुनर्पाठ अछि। उपलब्ध अध्ययन आ अनुपलब्ध स्वतंत्र मूल ग्रन्थक बीच सीमा स्पष्ट राखल गेल अछि।

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

मूल पाठ | विस्तृत आलोचना | सम्पादकीय निर्णय

विदेह

विदेह डिजिटल संग्रह

© 2027 Gajendra Thakur / Preeti Thakur